शबे बरात की फजीलत

मौलाना पीर ज़ुल्फ़िकार नक्शबंदी दब.

हवाला- खुतबात ए फकीर हिन्दी/४.

बिस्मिल्लाहीर रहमान्नीर रहीम

आज की रात दुवाये मांगने की रात हे, तीन महीने रजब, शाबान और रमज़ान आगे पीछे आते हे, हदीस मुबारक मे इन तीनो महीनो की फजीलत बतायी गयी हे, नबी करीम अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फरमाया रजब को साल के बाकी महीनो पर ऐसी फजीलत हासिल हे जैसे कुरान मजीद को बाकी किताबो पर फज़ीलत हासिल हे और इर्शाद फरमाया कि शाबान को बाकी महीनो पर वह फजीलत हासिल हे जैसी मे मुहम्मद रसूलल्लाह ﷺ को बाकी अमबिया अलैहिमुस्सलाम पर फजीलत हासिल हे और फरमाया कि रमज़ान को बाकी महीनो पर वह फजीलत हासिल हे जैसी अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त को अपनी मख्लूकात पर फजीलत हासिल हे.

लफ्जे शाबान की तश्रीह

बाज़ उलमा ने लिखा हे कि शाबान का लफ्ज़ 'शाबा' से निकला हे, ये लफ्ज़ उर्दू मे भी इस्तेमाल होता हे, काम के किसी हिस्से को शोबा कहते हे, शाबान का लफ्ज़ बना ही इसलिये हे कि इस महीने मे अल्लाह तआला की रहमत और फज़ल का खास शोबा काम करना शुरु कर देते हे, मिसाल के तौर पर जब मुल्क के अन्दर इलैक्शन होने लगते हे तो कयी शोबे काम करने लगते हे जो आम

हालात मे काम नहीं कर रहे होते हे या थोडा काम कर रहे होते हे, मगर उन दिनो उनका काम बढा दिया जाता हे, इसी तरह अल्लाह तआला की रहमत और फज़्ल का काम तो हर वकत हो रहा हे मगर रजब, शाबान और रमज़ान मे इन शोबों का काम फैला दिया जाता हे.

हर्फ के एतिबार से शाबान की फज़ीलत

बाज़ मशाइख ने फरमाया कि इस महीने को इसलिये शाबान कहते हे कि इसके पाँच हर्फ हे, 'शीन', 'ऐन', 'बा', 'अलिफ', 'नून'. इन हर्फो की फजीलत अपनी जगह पर हे, 'श' शराफत से लिया गया हे, 'ऐन' उलू मर्तबत से लिया गया हे, 'बा' बिर (नेकी) से लिया गया हे, 'अलिफ' उलफत से लिया गया हे यानी अल्लाह तआला की मुहब्बत और 'नून' नूर से लिया गया हे, इन पाँच लफ्ज़ों के पहले हर्फो को मिलाकर ये लफ्ज़ बना दिया गया हे ताकि बन्दो को पता चल जाये कि अगर हम इस महीने मे इबादत करेँगे तो परवरदिगार की तरफ से पाँच नेमते अता कर दी जायेगी.

रिज्क के फैसलो की रात

बाज़ रिवायतो मे आया हे कि १५ शाबान की रात रिज्क के फैसलो की रात हे, रिज्क मे बीवी, बच्चे, सेहत, इज्जत, माल व दौलत, कपडा, मकान हर चीझ शामिल हे, गोया आज हमारी जितनी परेशानियाँ हे वे सारी की सारी आमतौर से रिज्क से ही जुडी होती हे, आइन्दा साल के फैसलो की रात आज हे, फेहरिस्ते आज रात ही बनती हे और ये रमज़ान मे लैलातुल कदर मे फरिश्तो के हवाले

कर दी जाती हे, जैसे डिपार्टमैट के अन्दर फेहरिस्ते बनती हे और फिर टेकनीशियन के हवाले कर दी जाती हे कि उस पर अमल कर लिया जाये.

पन्द्रह शाबान का रोज़ा

इसलिये नबी करीम अकरम ﷺ ने इर्शाद फरमाया कि इस रात मे आदमी के आइन्दा साल ज़िन्दा रहने या मरने के फैसले होते हे और मे चाहता हूँ कि जब वह फैसला हो तो मे उस वकत रोजे के साथ हूँ, अय्यामे बीज़ (महीने के बीच के तीन दिनो) के तो वैसे भी रोजे रखने चाहिये, पन्द्रह शाबान का रोज़ा रखना मुस्तहब हे.

सब खजानो का मालिक कौन?

इर्शाद बारी तआला हे तरजुमा- कि ज़मीन मे चलने फिरने वाली हर चीझ का रिज्क अल्लाह तआला के जिम्मे हे, अलबत्ता तक्सीम उसकी अपनी हे, फरमाया तरजुमा- हमने उनके दरमियाँ रोज़ी को बाँट दिया हे जो कोयी भी चीझ हे उसके पास खजाने हे मगर हम एक मालून मिक्दार के मुताबिक उसे उतारते हे, खुशी के खजाने भी उसी के पास, गम के खजाने भी उसी के पास, आराम के खजाने भी उसी के पास, बे-आरामी के खजाने भी उसी के पास, इज़्ज़त के खजाने भी उसी के पास, जिल्लत के खजाने भी उसी के पास, सेहत के खजाने भी उसी के पास, बीमारी के खजाने भी उसी के पास, जब सब खजानो का मालिक वोही हे उसी के हाथ मे आसमान और ज़मीन के खजानो की कुंजियाँ हे तो क्यू न हम आज रात अपने लिये रहमतो के खजानो की

नेमते माँग ले, हम क्यू न परवरदिगार से ये सवाल कर ले कि ऐ अल्लाह हमारे लिये खैर के फैसले फरमा दे, हमारे लिये फज़्ल व करम के फैसले फरमा दे.

हुजूर अकरम ﷺ की दुवा

मेरे दोस्तो इन्सान अल्लाह तआला के रास्ते मे जितना खर्च करेगा अल्लाह तआला उतना ज़्यादा अता करेंगे, इस रिज्क के फैसले होने की रात आज हे, इन अवकात को गनीमत को जान लीजिये, मालूम नहीं कि आइन्दा साल हमे शाबान और रमज़ान तक पहुँचना नसीब भी होगा या नहीं होगा, नबी करीम अलैहिस्सलातु वस्सलाम दुवा किया करते थे "अल्लाहुम्मा बारिक लना फी रजब व शअबान व बल्लीगना रमजान" तरजुमा: 'ए अल्लाह हमारे लिये रजब और शअबान के महीने मे बरकत अता फरमाये और हमे रमजान तक पोहचा दीज्ये'.

सलातुत्तस्बीह की फजीलत

आज रात सलातुतस्बीह पढिये, सलातुत्तस्बीह की फजीलत का जिकर करते हुए नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फरमाया कि इस नमाज़ की इतनी बरकत हे कि आदमी को चाहिए कि वह रोज़ाना एक बार पढे, अगर रोज़ाना नहीं पढ सकता तो हर जुमा के दिन यानी हफ्ते मे एक दिन पढ लिया करे, अगर हफ्ते मे एक दफा नहीं पढ सकता तो महीने मे एक दफा पढ लिया करे, अगर महीने मे भी एक बार नहीं पढ सकता तो साल मे एक बार पढ लिया करे और अगर साल मे भी एक बार नहीं पढ सकता तो कम से कम ज़िन्दगी मे एक ज़रूर पढ ले क्यू की अल्लाह तआला

इसकी बरकत से गुनाहों का माफ फरमा देते हे.

सलातुत्तस्बीह पढने का तरीका

इस नमाज़ मे चार रकाते हे और हर रकात मे पिचहत्तर बार 'सुब्हानअल्लाहि वल् हम्दुलिल्लाहि वला इलाहा इल्लल्लाहु अल्लाहु अकबर' पढा जाता हे, हर रकात मे पिचहत्तर बार पढने की तर्कीब ये हे कि तकबीरे तहरीमा के बाद सना पढकर ये तस्बीह पन्द्रह बार पढी जाती हे, फिर सुरह फातिहा और सुरह पढे कायम में ही रूकू में जाने से पहले १० मरतबा तस्बीह पढे रूकू करे और रूकू की तस्बीह के बाद १० मरतबा तस्बीह पढे, फिर रूकू से उठकर कोमा में समीउल्लाह... के बाद १० मरतबा तस्बीह पढे, फिर पहले सजदे में सजदे की तस्बीह के बाद १० मरतबा तस्बीह पढे, फिर दरमियान बैठने की हालत में यानि जलसे में १० मरतबा तस्बीह पढे, फिर दूसरे सजदे में सजदे की तस्बीह के बाद १० मरतबा तस्बीह पढ, इस तरह हर रकत में ७५ मरतबा और ४ रकत में ३०० मरतबा ये कलेमात तस्बीह हो जाएगी, २री ३री और ४थी रकत में सुरह फातिहा से पहले १५ मरतबा पढे बाकि सब १ली रकत की तरह. अगर किसी रूकन मे पढना भूल जाये तो अगले रूकन मे इसकी तादाद पूरी कर ली जाये और गिनने का तरीका ये हे कि जैसे हाथ बांधे खडे हों उसी हालत मे उंगलियों के पोरे दबाकर गिनना जाये.

कुबूलियत दुवा का राज़

मेरे दोस्तो दुवा दिल का अमल हे, ज़बान से तो सिर्फ इज़्हार होता हे, इसलिये दिल से गिडगिडाकर दुवा माँगेगे

तो अल्लाह तआला हमारी दुवाओ को ज़रूर कुबूल फ़रमायेंगे, एक बुजरुग जब मजमे मे दुवा माँगते तो फरमाते कि हमारी दुवा कुबूल हो गयी, किसी ने कहा, हज़रत आप कैसे कह सकते हे कि हमारी दुवा कुबूल हो गयी, आपने फरमाया, इतना मजमा अगर किसी सखी के दरवाजे पर चला जाये और उससे जाकर वह एक चवन्नी का सवाल करे तो बतावो कि वह इतने मजमे को खाली हाथ भेजेंगा या चवन्नी देकर भेजेंगा? उसने कहा, हजरत वह खाली तो नहीं भेजेंगा, एक चवन्नी तो दे ही देगा, आपने फरमाया इस दुनियादार का चवन्नी देना मुश्किल काम हे और परवरदिगार के लिये उन सबको माफ कर देना आसान काम हे.

बख्शिश का अजीब बहाना

अब एक नुकता समझिये कि हर बन्दे की हिफाजत के लिये फरिश्ते तय हे, इर्शाद बारी तआला हे तरजुमा- आमाल नामा लिखने वाले मुहाफिज़ फरिश्ते मुकर्रर हे, ये अदलते बदलते रहते हे मगर एक बुजरुग ने बडी अजीब बात लिखी हे कि जब अल्लाह तआला किसो बन्दे से खैर का इरादा कर लेते हे तो उसके गुनाह लिखने वाले फरिश्ते तो नहीं बदलते मगर नेकियाँ लिखने वाले फरिश्ते को बदलते रहते हे, गोया गुनाह लिखने वाला फरिश्ता वही रहा और नेकियाँ लिखने वाले फरिश्ते बदलते रहे, जब कियामत के दिन आमाल नामा खुलेगा तो गवाहियाँ देने वाले फरिश्ते दो तरह के होंगे, गुनाहो की गवाहियाँ देने वाला फरिश्ता एक होगा और नेकियो

की गवाही देने वाले फरिश्तो की एक जमात होगी, अल्लाह तआला इस बात को बहाना बना लेंगे कि मे एक की बात मानु या जमात की बात मानु, लिहाज़ा जमात की बात कुबूल करके अल्लाह तआला अपने बन्दो की मगफिरत फरमा देंगे.

रोज़े जज़ा का मालिक

अल्लाह तआला ने अपने बारे मे ये नहीं फरमाया कि मे कियामत के दिन का मुन्सिफ हूँ बल्कि तरजुमा-फरमाया, मे रोजे जज़ा का मालिक हूँ, इसमे हिकमत ये हे कि मुन्सिफ खुद भी उसूल का पाबन्द होता हे, किसी की हिमायत करना उसके लिये मना होता हे लेकिन जब कोयी मालिक बन गया तो अब उसके पास इख्तियार हे कि वह जब चाहे, जिसको चाहे बख्श दे, वह गुनाहों को नेकीयों मे बदल दे तो परवरदिगार इसका भी हक रखता हे और वह किसी की नेकीयों को ठुकरा देने का हक रखता हे क्यू की वह कियामत के दिन का मालिक हे, जब हमारा मामला से हे तो क्यू न हम आज ही उस मालिक को मना ले ताकि वह हमारे गुनाहों पर कलम फेर दे और हमारे गुनाहों को नेकीयों से बदल दे.

आज की रात इस हवाले से बडी अहम रात हे, इसलिये आज खुसूसी दुवाये माँगिये, क्या अजब हे कि अल्लाह तआला आज की रात मे हमारे लिये खैर के फैसले फरमा दे.